

१३ नमः श्रीसर्वस्वनामः॥

॥ अथ शैविक विधि ॥ पादनथय रूपसा विधिर्थास्वायनय ॥ गुप्ते
दपदने विसृज नयाय कावनापडी क्राय कृतहामन कवनासगय प्रवसाइरु धनिक किरु धनय वा किरि
सुसंकपयाय वा के ॥ उ नमः ॥ गवतस च इति यत्रिसा धन जाजायत थागता प्रहं कसंय कसंय थाय
तदथा उस्वधनेर विस्रधनेर सव्यापविस्रधन शुद्धवि शुद्धदि मीगत अस्र कनाम थाय सवक
मावज नवि एम हसा वा ॥ वा गंय प्रय ॥ वाथनयान उम जाडा अया वाने जा चक वा दस नु वाक
वियाडा वैदया चक वा उ उर्वेद रण धा रि दु रण वा रु वा धन जडा वाथ कनस सु गवदा कायाडा

वि

उ

वेग घाच क आया गव गाय गव गदा रु स्वी को ज को इ ध न आ य वा थ न वे ग त य थ म स हा हा स्वी ज वा
य क य प्र ह ल त य क वा क उ वे प्रा च ना य स्वा हा उ अ की ला य स्वा हा उ न च स र वा य स्वा हा उ अ मि
गा ला य स्वा हा उ अ मा ध सि क्ष स्वा हा वा थ न वे ग त य वा स्वि या उ वा क वा उ स र्व इ र्ग ति य त्रि स्र ध न वे ग
रु ग गा न क स्य व द्वा द के स्वा हा वा थ न धू ग य थ न स्ना न या ग क वा का क उ अ सी गै री नि रु त स्य र ज
म द्वा न वि नि मू कं या हि मा ग न न र्ग य स र्व इ र्ग ति वि त्रा अ य स र्व इ र्ग ति य त्रि स्र ध न वे ग र का न
का य अ र्घ्य प्र ति ष्ठ सा हा स र्व स गा य ग व ग दा रु ज स्वी त स्य अ र्घ्य वि य वा थ न वे ग उ ज म का स्वा न

॥ २ ॥

॥ २ ॥

४९

नेचदं। सक्तवः साइइ। धावा। सिवा। सत। किमिनेवाके। उंमन्यमन्यमहामनेसाहा। धनगवमागा। दवाक्र।
मगलसर्कपूजा। उंनश्याहप्राजयाकपिनागवमागायप्रमामिहं। उंईईईईमहयैवेणाचर्यनमस्तुते।
धनकसहामलविया। देवगा। वसुसूर्य। यिथि। गुप। गीगा। कसतयक। धनकसपुनिकासायवाके। रावनाव।
उंससागगायमिगमासमगास्यतीगागागाकाभर्मसर्वदेवतादिशि। रगवीता। गुनवसा। लीक। वनादेव।
नागा। रतापगा। पिता। चाद्या। सर्वप्रागत्यदूधनसर्वप्राजापुत्रकैत। ब्रह्मात्मगुलवर्त्तला। महावर्द्धरसा।
पद्वधतारुस४सर्वदुर्गातियनिगाध। ससा। नावाधप्राप्य। नचक। गिर्यकृपुष्टिर्घीय। इवीनत्रामि।

थच करद्विमीगापसगतिप्रायः॥ अन्त्यान्तरगणसर्वधर्मोपनमनगणविगणसर्वधर्मोपनमन
 प्रयत्नसर्वधर्मो॥ उं वज्रवर्षसर्वविगणवज्रवर्धनः॥ थन कृतसदृशिकाथगुणविधिर्थः सनातनपूजा
 कितनेकाकेशः उं मन्त्रसहामन्त्रस्वाहा॥ थन कृतसदृशिकाथगुणविधिर्थः सनातनपूजा
 केशः कृतसर्गुल्लेखायकेशः थन यिन्यग्वदाचीनकेशः जगदाभस्याजइधन॥ यिन्यग्वदाविनकेशः थन कृतसा
 पयतमानकाकृतमालकोशनको॥ वाकेशः कृतसदृशिकाथगुणविधिर्थः सनातनपूजा
 कनामधाययुगगताथयोवसाम्यससिकलीकि कापेयुपागुनार्थः ॐ देवसासलमुपगतिगौ॥ कृतसग

[illegible]

पिं

॥५॥

धनकाल ॥ ॐ नमः ॥ गवतः अमृतं केतुना जायतथा गताया र हं न संभवति ॥ वक्ष्यते दधौ ॐ अमृतं
अमृतं गवतः अमृतं संरुके अमृतं दिक्कं न कामि न्य अमृतं नाम धाय सर्वकामां कुर्यं क प्रियं वक्ष्ये ॥ ध ॥
ॐ पूज्यं महापूज्यं अमृतं गवतः अमृतं मितायूने हान संरुजय के का प्रियं लस्य धाहं ॥ लं ॐ ॥ ॐ
सर्वविघ्नवज्रं धाहं वक्ष्ये ॥ ध ॥ ॐ सर्वविघ्नवज्रं मितायूने हान संरुजय के का प्रियं लस्य धाहं ॥ लं ॐ ॥ ॐ
सर्वविघ्नवज्रं धाहं वक्ष्ये ॥ ध ॥ ॐ सर्वविघ्नवज्रं मितायूने हान संरुजय के का प्रियं लस्य धाहं ॥ लं ॐ ॥ ॐ
सर्वविघ्नवज्रं धाहं वक्ष्ये ॥ ध ॥ ॐ सर्वविघ्नवज्रं मितायूने हान संरुजय के का प्रियं लस्य धाहं ॥ लं ॐ ॥ ॐ

कु

॥५॥

४४

स्वसिन्धो

स्वधावा जल वाः रुख वा क वा स र वर जा वा द जे नार् आर्ग वा धः ग्व वः ग्वार् ज द्वा य स कर्ता क्त य वा स ता इ जः
 यि न्द्र वि स ज नः आर्गो वा दः रि न्द्र धृ यः स क ता स क थ नः अ का स मा ला क यः वा धृ य उ य के न त उ य के
 ता हा णो स कू स न सीः अ द का सीः वा क जा गी तु ध्या दि वा न्द्र प र स हा प र दि मी ग त अ मू क वा स थ य य
 रि स हा ज ज न वा आ स या व र्था लो क धा तु म नू ग र्दं तु ल्य धा वा गु प्र न स फा श्रु न का सी वि स र्जे न ग
 धू न का आ र्मि द न्द्रा थ ज स्वा स थ वी य कि ति न आ र्मि वा द स न्य ज वि स ज नः सी ध न य स र्ध न थ ॥
 पः द ज ग र्ध धू नि लो क गु यि न्द्र वि धि इ प्र वा ॥ सी न्द्र १८ द न स सि ध य का द्र द्वा दि ९ वा

वशायसिधः ॐ ह्रीं सु



[illegible]

४ गुणनकरक वन्सू शय जद नपनिजत ॥ चक्रपद्मवज वाकविमुद्धि
कुर्यात् ॥ रूपकध्व वेला चनै वेदना स्कंध वजसूर्य सहान स्कंध पद्म नृत्य ग्व
नसका नैक ध्व वज जाज विहान सकै ध्व वजस त्व सर्वत भागत श्री ह नैक वज ॥ ॐ
वक्रुषामाह वजि रमातयो धमवज धनय निष्कं कम्यजि वकुय नाग वजि रमा समा
नय ४ पृथिवि धातु पातनी आप धातु मानि नै जा धातु कर्त्तव्य वायू धातु पद्म न
त्यग्धनी आकाश धातु पद्म जानिनी ॥ ५ पुनरी शालि कालि पकिं नर्धन का

॥ समा ॥ नमः सूर्यमन्त्रं तन्मन्त्रं कालं लपानि नाम नमः रगवैतं कृष्णवर्णं परं प्रथमं रजा ॥ दि ॥
॥ ३ ॥ व्यावज्जरघी ॥ धनीदितियास्यी उवज्जगुनिपासं नितियास्यी उमज्जगुनिपासं उमरेवे ॥ ३ ॥
कृष्णं स्यामाजकपीता का का स्यावृ ॥ उत्र का स्याग्धामा ग्वानाम्यानाजका सुक्
नास्यापिता यन जटिकृष्णीता यमद्रुतिपीतन कायम द्रुतिन का स्यामायमममर्धनी
स्यामवृष्ठा ॥ नतासंभनिसूक्त यरुं ररुट स्याहा ॥ उं गृद्रा ररुं ररुट ॥ उं गृद्रा
पयररुं ररुट ॥ उं मानयररुं ररुट ॥ रगवैतियालाज ररुं ररुट ॥ ॥ गता ४ मालिका ॥

[illegible]

॥ समा ॥

॥ ४ ॥

नहं हं ॥ उं वज्र किल य वज्र धन आहाय यन्ति सर्व विद्यु विनाय कानी काय
वा क चिह्नः क जान किल य हं हं ॥ उं वे ज म्हा ऊ व वज्र किल य मा का ट प र हं र
हं ॥ ४ ॥ ॐ ति नि वि द्यु वि ल य य त् ॥ त नः स्व रु द स्तु हं का ल स्मी हि ज ग द र्थ
कृ त्वा म ग नि र्द र व नै ग त्वा त ण स्तु म ना दि र्म ति ह य त् ॥ द ग्री च कु र्म म्ब नै र ग वै त
स प लि वा नै र ग व ति स ता प नैः स म य म नु ले प स त् ॥ ५ ॥ ग तो ह्य रु य ऊ प्र स्मी
ला रिः ॥ म्हा कृ र्क ह न च कुः ॥ आ का स द भो दृ ष्टा म रि मू र्खे म रि म रि र प र ॥ स म

॥ दि ॥

॥ ४ ॥

२५

[illegible]

लायहं ह्रस्वाहा ॥ उं काली कू लायहं ह्रस्वाहा ॥ ठं कलि कट ह्रस्वाहा ॥ वायहं ह्र

25

साहा ॥ उं मृद दृहासयहं दृ दृत्वाहा ॥ उं लक्ष्मीवनहं दृसंय दृ हा ॥ उं धा नौध
कालायसाहा ॥ उं किलिरन वायसाहा ॥ ॥ पंथीउहालपूजाध्यासाहा ॥
॥ वादनमुक्ति ॥ ॥ सर्वहृदयनसदाहृदयगदधप्रसाद्वर्कः विनामनिप्रियो उर्ग
श्रीसम्बलनमोमुक्ति ॥ ॥ व्याकृविस्वमहाहृदयनः सर्वात्मनिसदाष्टिः कृपाक्रादमहात्रोडि
श्रीसम्बलनमुक्ति ॥ ॥ तर्पण ॥ ॥ उं मशरुगवर्गविलविप्रश्वजायहं दृ
दृ ॥ उं माहाकल्याणिनिसनिलस्वजायहं दृ ॥ ॥ उं जयमकूटालकयहं दृ ॥ ॥ उं

॥ समा ॥
॥ ६२ ॥

शकलाग्निरिव नमस्वायहं हृदं ॥ उं सह गं उजलास जायहं रं हृदं ॥ उं पलस
पागदग्निसुलखत्वा रुधा लिनिमहं हृदं ॥ उं वा पुत्रमावलधलायहं हृदं
उं महाधूमीधका जायहं रं हृदं स्वाहा ॥ ॥ त तापाय देगनाः शत कालिभ्रमो
दिगमघमपिलनिहिदाधाना पुतिदसयामि ॥ पूनलकर्जसम्वर्तविलधग्रावक ४ र्वज
जिनागर्भः जिनसूखसंरगानिः कूसलानी अन्मोदिनानिः बोधिस-म्यकलिनाम
यामख ४ जिनकन्नादिगुयोः सर्वलसननीया हरिः सर्वलावेन बोधिबोद्धविलध ६

॥ दि ॥
॥ ६३ ॥

३४

दि॥ पृथ्व्यासः पंचाप्रहा ल॥ लास्याः ४ धर्मः ४ वा ४ मनुनि ॥ ॥ ॥ ॥
बलिवलि शवना ॥ ॥ नारायण कालेन वायुर्मदुलैः तपः कादिपत्रिपुलि।
गैतदूपात्रिने जात भुजिमन्तु लैः तपः सुकुशा काले ॥ सिद्धपद्म गजनीः मूत्र
विषय च त्रिकायवधित ॥ उँ गँ भ्रँ जिँ र्वँ हूँः लौ म्रौ पौ गौ वँ कान जात पंचा म
तपं सुप्रदिप रूपे नानिष्यद्यः वायु प्रानत डामि तानि तप विप्रिर्न विजा ऊनादि
दीर्गहिन लानूव लू ड वनूपे दृष्टाः तद्रूप निविता र्वं तनिर्तं कृत्वा ॥ ॥ आत्रिका

लिषकित्य उँ भ्राह्मं कायेत्य मन्त्रः उँ पमिन्मि ह्ययं देवता मन्त्राणि अग

समा

(८)

अर्थं कृत्वा सकला मृग तसमानियव हृदि कप्रविश्यः जयान्कषु विजेष्यति ॥ दि ॥

二

एव नियम् ॥ ईं नमो कालाधिपिक्रमां विप्रनवजीक ॥ जं जराहं ॥ वा वलिग्रहयि

॥ अनघयुक्तापि वा प्रहल ॥ ॥ भालिकायलिनवयन्युसंयस्यतवकवद्व

यान्ते ह्येकाल इष्टाया गन्तवाना नूनाः सर्वधर्म्मानां डंवलस्यन्ताः शोना सर्वधर्म्मा

ॐ सत्यं नाद्रुग ॥ सर्वभूम्याः द्रव्यप्रमानं समर्थं प्रमानं तद्वत्कथावत् सत्यं लप्रमानं ॥

[illegible]

ॐ शानयहारगवन्विद्याप्राज्ञरुद्र ॥ ॥ ततोभाका जगकात्रलसूर्यमलुर्लतसध्वरुं कात्रे तवि मा
ज्ववर्जं हूं कात्राधिष्ठितं तदस्मिन्नायकं लप्रमा लवजकनिकात्रयेन धगतीवजमयी ह्मिविविद्विद्यय ॥ ॐ
मदीनीवजीरुववजवन्ध्रं ॥ ॐ वजपाकात्रहूं वें हूं ॥ ॐ वजयैजत्रहूं यें हूं ॥ ॐ वजवीनानहूं र्वें हूं ॥ ॐ वज
गुपजालगं गं ग ॥ ॐ वजकालानलाक्षहूं ॥ ॐ कात्रजादिरापाकात्रसमीक्षयनिधिसिगान् ॐ आदिवि
घ्नान् स्रवयकिलयग ॥ ॐ घघ्याघाट्यरसर्वविघ्नान् रुद्र ॥ ॐ किलयरसर्वयापानहूं रुद्र ॥ ॐ वजकिलयव
जधनमाश्रयतिस्त्वेविघ्नविनायकानीकायवाक्कविरुवजान् किलयहूं रुद्र ॥ ॐ वजमूर्जनवजकिलयज्ज

[illegible]

ॐ जटामक्रयत्कराय हं रुरु ॥ ॐ वृषाकपा लाग्रहीय नमूषाय हं रुरु ॥ ॐ सहस्रज गस्त्याय हं रुरु ॥
स ॐ पत्रमया रभयत गृत्तरवद्दी गधात्रि श हं रुरु ॥ याघ्रिजीवी वपधाय हं रुरु ॥ ॐ मस्त धूमा श्वका
॥ ५ ॥ प्रवपू उवाय हं रुरु ॥ ॐ मिमकु मय न ॥ तत्पायाय दं गत्रा कृत कानि गम नू मादि त मद्य मखिल मि
दि तदा या नी प्रति दे गायामि पून ग ४ पून न लं सम्य नै विद ध व्याव कर व ग जि ना रु म जि न मू ग म उ ता नि कू ग
लानि मू नू मादि ता नि वा धो सम्य क जि नी म या म्य व जि न प्र ता दि गि त र्यं ग प्र ल या व कू ग ता मि न स व र
५५ ध व धा धो वि हं वि द ध मू नू ल प्र मा र्ग क था स्य वे द्या दि या ग ४ ॥ ॥ ग ता मी गी क रू ना मू दि ता प्र उं च ॥ ५५

ॐ

जिवि वैवमाम्भविनिगहविष्णामि वाधिविहकवेत्सा गथागतकूलपुत्रममाह्वान
सैखवमममदिविष्णुहिदिउऊहियमनूहजं उंसनिपागहवेह देसर्वचूधनि
मैतना ॥ धन निलो जिन ॥ ॥ उं आ ४ वजयक्रुसर्वपापविघ्नमपानरुसिं कूर
हूं हूं हूं कापको ॥ उं आ ४ वजयक्रुसर्वक्रुसपक्रुस साग्निजं नि कूर हूं हूं हूं
खस्यान ॥ ॥ उं आ ४ वजयक्रुसर्ववपनमानानपनये हूं हूं हूं चमना ॥ ॥ उं आ
४ वजयक्रुसर्वपून्धह्वानसैलानान्धय हूं हूं हूं ॥ धजाग्वजा ॥ ॥ उं आ चमनं ॥

[illegible]

जा॥ वाचहान्ठायकवाथनशसिनम्बुङ्गनाडावाके४ससिवाप्ययादि२३ं३३ग्नेदि
दिपविषांष्टमहाश्रीयरुव्यकव्यवाहनायदा नपती३मूकस्य३मूकनिमिया
थन३ग्नेरुपापनंशत्ररहेहं४थनकसत्रषन३ग्नेसस्यंहावनावा वा३उंगुका
लिता३ग्नेसधपंकात्रजं३मममात्रंवा३नइपत्रिलंजा३ग्नेसमष्टुर्न३सूकाला
रुचपितवल्ममषमूषं३वुर्उरुर्जं३वाम्यर्ददकास३उत्रधर्न३सचावपदा३मालाधर्नं
पितावनाहन३४उहाप्रविगवि३नर्जं३जतामकुनधर्ननी३वजसस्रनं३४नी३मपिनं

हामा

१३

समय अग्निविशवा ॐ अहिमहा रं न धिजसस्व गहिता हंति महानि सनिहि
ता वस्वाहा वा यन हाना अग्नी आवाहन वा ॐ आतर्कि ऊ हं इति ना ज हो
मूद्रा याद गहिता यन मूद्रा केन रा यन निली जन क्षी य वा मूद्रा वा ॐ अग्नि दि ॐ प
दिव्या विषां विषमहा ग्री य ह व क व वाहना य इत्यं ऊ हं व हों वा अग्नि स मूद्रा केन ॥
ॐ वज्र रु हं सं ष नै ष न अग्नि सहाया ॥ अग्नि प्रवस का नाय पा ध्या यं अर्घ्यं प्रतिष्ठ
स्वाहा ॥ मूद्रा सा ॥ ॐ अग्नी प्रवस का लाय पा था दि प्रतिष्ठ स्वाहा ॥ पाद ग ॥ ॐ अ

दि
१३

३४

एनप्रवस्त्रायायश्रावमनैप्रतिरुस्वाहा॥ सुतुस॥ ॐ वज्रजम्भा॥ ॐ सर्वेनथा
गतकायाविस्वधनेसाहा॥ ॥ धन४पै४जा४धै४गु४पै४वा४मृ४न४पै४च४रु४न४स४ना
ना॥ पै४च४प्र४हा४ल४पू४जा॥ ॥ पै४जा४धै४गु४ति४त४त्य४ना॥ ॥ धन४धन४का४च४के॥
ॐ वज्रसत्त्वाश्रा १०८ वाज्रजमाननकासाचकेः रूपयके॥ ॐ तगुजगिर्मूष्यनै
कापेनयवज्ररूपप्रमानैगुक्तवज्रविश्रय४जाने४नै४न४स्थि४त४गु४च४न४मू४षा४व४के॥
थवरमै४न४घि४ता४कृ४ति४इ४य॥ ॐ जग्नस्वाहा ३ घृता॥ हौं वि४द४क्व४ध४न४ज्ञा४न४

होमा
१४

द्वय॥ अर्काय स्वाहा॥ अर्कसि॥ उं वज्रसामाय स्वाहा॥ पिनासि॥ उं वज्रां गाय
स्वाहा॥ लयासि॥ उं वज्रवर्धाय स्वाहा॥ अपामासि॥ उं वज्रजहाय स्वाहा॥ इम्बने दि
सि॥ उं वज्रअनिजनाय स्वाहा॥ सत्रिकथसि॥ उं वीधिविआय स्वाहा॥ उगलतसी
॥ उं वज्रनकाय स्वाहा॥ पनाषसि॥ उं वज्रविआय स्वाहा॥ वज्रनरसि॥ उं मधून
स्वाहा॥ मधूकाकर्तसि॥ उं अस्त्राकाय स्वाहा॥ अस्त्रयसि॥ उं सर्वपापप्रमलाय
स्वाहा॥ धैकवसि॥ उं वज्रसहकायाय स्वाहा॥ गहानिति॥ उं वज्रहिलिका

३५

यस्वाहा॥ हिलानकसि॥ ॐ वज्रमदनायस्वाहा॥ मदकं ० का॥ १२॥ ॐ वज्रायस्वा
हा॥ वा ४॥ वा ४॥ स्वान॥ ॐ सर्वपापदहनवजायः सर्वपापदहस्वाहा॥ हा ॥
ॐ वज्रपुत्रस्वाहा॥ मायन॥ ॐ वज्रधामजायस्वाहा ४॥ ॐ वज्रघसमनायस्वा
हा ४॥ ॐ वज्रविजाजायस्वाहा॥ स्वानवा॥ ॐ वज्रमहावत्सायस्वाहा ४॥ मास॥
ॐ वज्रायस्वाहा ४॥ ॐ वज्रधामजायस्वाहा ४॥ वज्रन॥ ॐ वज्रपितामायस्वा
हा॥ कर्ण॥ ॐ सर्वार्थसिद्धयस्वाहा॥ ॐ काप्रे को॥ ॐ सर्वसंप्रदयस्वाहा॥ वजाः

श्रीमा

१५

धृजा॥ॐ वज्रजा श्याम स्वाहा॥ न वा॥ॐ श्री दुसन रु लाप स्वाहा॥ कनसि ज्ञाने द्य॥

पैजा ४ ध्यं ४ गुति॥ सुला पात ससा इद्रा पा ववा कया य द्य॥ॐ वज्र सस्व ज्ञा ४३॥ दि

थेन धन तया व द्य वा क॥ सुस्ति वा क॥ॐ श्री नदि पदिया विषा विष महा श्री यः १५ =

हय क य वा हा नायः दान पति ज ज मान साः श्री मूनि मि वार्थ न॥ॐ श्री स्थापनी श्री न

रुति प्रति रु स्वाहा॥ पैजा ४ ध्यं ४ गुति ४॥ॐ सलष न हा य हा म स॥ॐ श्री वक्र नाच मना

दिर्वा रु ला लोको रु न हा ना श्री ग वि ला यः का जा का जा नी यः दः रु ग क म ल वं डा स

३१

यस्याहा॥ उरुलसकी॥ उँ वज्रकंधायस्याहा॥ सकिदकी॥ उँ वज्रदिय्यजिंसाहा
॥ सायिना॥ उँ वज्रपिक्की कायस्याहा॥ पीचयकं वामधि॥ उँ वज्रपिसम्यस्याहा॥ मधि
बधि॥ उँ मूलरुलायस्याहा॥ २॥ उँ वज्रमातुंगरुलायस्याहा॥ नसि॥ उँ वज्रग
तिरुलायस्याहा॥ रुलरुलदकी॥ उँ वज्रकउलिहलास्याहा॥ कजा॥ उँ व
ज्रूरुलयस्याहा॥ ३॥ उँ सर्वत्रागप्रसमलायस्याहा॥ जज्जेउपधिसर्वउ
पधिरुकी॥ उँ वज्रगौरुलरुलायस्याहा॥ ज्वयमव॥ ॥ धनस्वस्तिवाकन

पदये अरुनादिपवित्राविषहयकचवाहनायदानपीतिजमानस्यमसूकान
 होमा मयाथनःमूत्रपूनाहतिप्रतिच्छावाहा॥ १॥ पवीप्रहानपूजाजगमदि
 १७ नकाकायपायसमाफयायविसजनःसघनकायचितपूजादकनाविहद १७
 कछपातसरांगमतस्यदकइयाथनजाजगमहतियाय॥ ३॥ तस्मादजायमद
 धिपतिस्वसनित्रविचिंतुयंतुःअद्यादिकंइत्युंअहचकचवाहनायःसन
 पतिजऊमानस्यमसूकस्यतांतिस्वसिंथासिंकुनूरदंकरखाहा॥ ॥

३८